IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजस्थान के धार्मिक आंदोलन में मीरा के योगदान का ऐतिहासिक दृष्टिकोण

Rajasthan Ke Dharmik Aandolan Mein Meera Ke Yogadaan Ka Eitihasik Drshtikon

पंकज कुमार मीणा

सहायक आचार्य इतिहास

(विद्या संबल योजना)

राजकीय कन्या महाविद्यालय, नारायणपुर,

(कोटपूतली बहरोड), राजस्थान

शोध सारांश

मीरा बाई मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की महान संत और कवियत्री मानी जाती हैं, उसने राजस्थान के धार्मिक जीवन को एक नई दिशा दी। उनका जन्म 1498 ईस्वी में मेवाड़ के कुम्भलगढ़ किले के पास हुआ था, और उनका जीवन और काव्य भारतीय भक्ति साहित्य के महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक बन चुका है। मीरा बाई ने भक्ति, प्रेम और समानता का संदेश दिया, और उनका योगदान न केवल धार्मिक अपितु सामाजिक परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण है। मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन ने धार्मिक और सामाजिक जीवन को नए रूप में प्रस्तुत किया। भक्ति आंदोलन का उद्देश्य भक्तों के बीच ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत प्रेम और समर्पण को प्रोत्साहित करना था। यह आंदोलन मुख्यतः भगवान के प्रति प्रेम को उच्चतम धार्मिक अनुभव मानता था, और इसमें जाति, धर्म, और अन्य सामाजिक बाधाओं का कोई स्थान नहीं था। मीरा बाई इस आंदोलन की प्रमुख हस्ती के रूप में उभरीं। उन्होंने भगवान श्री कृष्ण के प्रति अपनी निष्ठा और प्रेम को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया।

शब्द कुजी :– धार्मिक, विचारधारा, आन्दोलन, कृष्ण–भक्ति, सामाजिक, ऐतिहासिक।

प्रस्तावना :

मीरा का प्रारम्भिक जीवन–भक्तिकालीन कवियों में मीरा का विशिष्ट स्थान है। जिस समय राजस्थान में जाम्भौजी, दादू आदि सन्त धार्मिक समन्वय और समाज सुधार के लिए प्रयास कर रहे थे उसी समय राजस्थान में सगुण भक्ति रस की धारा बहाने वालों में मीरा का नाम सर्वोपरि है। दुर्भाग्यवश मीरा का प्रामाणिक तथा क्रमबद्ध जीवन उपलब्ध नहीं है। डॉ. नरोत्तम स्वामी के अनुसार मीरा का जन्म 1498 तथा 1504 ई. के बीच माना जा सकता है। डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने मीरा का जन्म 1498–99 ई. माना है। डॉ. पैमाराम के अनुसार मीरा का जन्म 1498 ई. में हुआ था। मीरा अपने पिता रत्नसिंह की इकलौती पुत्री थी। मौरा का जन्म मेड़ता से लगभग 21 मील दूर कुड़की नामक गाँव में हुआ था। जब मीरा केवल दो

वर्ष की थी तो उसकी माता का देहान्त हो गया। अतः मीरा मेड़ता में अपने दादा राव दूदा के पास रहने लगी। राव दूदा कृष्णभक्त थे। मीरा के पिता रत्नसिंह, चाचा वीरमदेव और उसकी दादी सभी वैष्णव धर्म के उपासक थे। अतः बचपन से ही मीरा वैष्णव धर्म के वातावरण में बड़ी हुई।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य धार्मिक आन्दोलन मे मीरा बाई के योगदान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उनके काव्य साहित्य, और उनके सामाजिक संदेशों का विश्लेषण आदि का अध्ययन करना हैं।

शोध विधि व उपकरण

इस शोध पत्र से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं को एकत्रित करने के पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं के लेखो, समाचार पत्रों, शोध प्रबंधों के माध्यम से द्वितीयक स्त्रोत सामग्री प्राप्त की गयी।

साहित्यावलोकन

कृष्णा देवी पांडे (2017) ने अपनी पुस्तक राजस्थान में मीरा बाई का धार्मिक योगदान में मीरा बाई के साहित्यिक योगदान को परिभाषित किया है। उन्होंने यह दर्शाया कि मीरा बाई ने अपनी भक्ति के माध्यम से राजस्थान के धार्मिक जीवन में एक नई चेतना का संचार किया। उनके पदों में न केवल कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण था, बल्कि उन्होंने समाज के ऊँच–नीच और भेदभाव को भी चुनौती दी थी।

शंकरलाल वर्मा (2013) ने अपनी पुस्तक मीरा बाई और राजस्थान के भक्ति आंदोलन की परंपरा में मीरा बाई के भक्ति साहित्य की विशेषताओं और उनके जीवन की संघर्षपूर्ण कहानी पर प्रकाश डाला है। उनका मानना है कि मीरा बाई ने न केवल अपने धार्मिक विश्वासों के प्रति दृढ़ता दिखाई, बल्कि भक्ति के माध्यम से सामाजिक सुधारों की दिशा भी खोली।

परिचय

मीरा कृष्ण की भक्त थी। उसका जन्म जोधपुर के मेड़ता क्षेत्र में रतन सिंह के यहां हुआ था। मीरा का विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ किन्तु विवाह के कुछ ही वर्षों बाद वह विधवा हो गयी। अब वह कृष्ण की भक्ति में गयी। वह कृष्ण को अपना पति मानती थी। वह कृष्ण की मूर्ति के सामने नाचने गाने लगी। इससे रुष्ट होकर राणा परिवार ने उसे मरवाने के प्रयास किये, जो असफल रहे।

मीरा में कृष्ण–भक्ति की भावना उनकी दादी द्वारा उत्पन्न हुई थी। जब एक बारात को देखकर मीरा ने अपनी दादी से पूछा था कि यह बारात किसकी है तो दादी ने उत्तर दिया कि दूल्हे की बारात है। मीरा ने पुनः प्रश्न किया कि उसका दूल्हा कहाँ है तो दादी ने कहा कि उसका दूल्हा गिरधर गोपाल है। कहा जाता है तभी से मीरा ने गिरधर गोपाल को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना शुरू कर दिया। राव दूदा ने पं. गजाधर को मीरा को शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया। पण्डितजी मीरा को भिन्न–भिन्न कथा, पुराण, स्मृतियाँ आदि भी सुनाया करते थे। फलस्वरूप मीरा थोड़े ही वर्षों के बाद पूर्ण विदूषी एवं पण्डित बन गई।

कृष्ण प्रेम में पूर्ण रिक्त मीरा को जब मेवाड़ में चैन से नहीं रहने दिया तो वह पुष्कर मेडता होती हुई वृन्दावन चली गई। यहां पर मीरा ने रूप गोस्वामी के दृढ़ निश्चय को कि वह स्त्रियों का मुख नहीं देखेगा तुड़वाया, वृन्दावन पहुंचने से वह अनेकों संतों के सम्पर्क में आ चुकी थी किन्तु वृन्दावन में आकर उसका भक्ति एक नवीन एवं मौलिक रूप ग्रहण करने लगा। मीरा को मधुर भक्ति के मार्ग पर चलने का

सुअवसर अब मिल चुका था। मीरा को जब यह जात हुआ कि कृष्ण तो वृंदावन छोडकर द्वारिका जा बसे है तो कलियुग की यह गोपिका उनसे मिलने द्वारिका जा पहुंची। राजा ने अनेक पुरोहितो को मीरा को वापिस चित्तौड लाने हेतु भेजा परन्तु मीरा नहीं आई।

मीरा का प्रारम्भिक जीवन

भक्तिकालीन कवियों में मीरा का विशिष्ट स्थान है। जिस समय राजस्थान में जाम्भौजी, दादू आदि सन्त धार्मिक समन्वय और समाज सुधार के लिए प्रयास कर रहे थे उसी समय राजस्थान में सगुण भक्ति रस की धारा बहाने वालों में मीरा का नाम सर्वोपरि है। दुर्भाग्यवश मीरा का प्रामाणिक तथा क्रमबद्व जीवन उपलब्ध नहीं है। डॉ. नरोत्तम स्वामी के अनुसार मीरा का जन्म 1498 तथा 1504 ई. के बीच माना जा सकता है। डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने मीरा का जन्म 1498–99 ई. माना है। डॉ. पैमाराम के अनुसार मीरा का जन्म 1498 ई. में हुआ था। मीरा अपने पिता रत्नसिंह की इकलौती पुत्री थी। मौरा का जन्म मेड़ता से लगभग 21 मील दूर कुड़की नामक गाँव में हुआ था। जब मीरा केवल दो वर्ष की थी तो उसकी माता का देहान्त हो गया। अतः मीरा मेड़ता में अपने दादा राव दूदा के पास रहने लगी। राव दूदा कृष्णभक्त थे। मीरा के पिता रत्नसिंह, चाचा वीरमदेव और उसकी दादी सभी वैष्णव धर्म के उपासक थे। अतः बचपन से ही मीरा वैष्णव धर्म के वातावरण में बड़ी हुई।

मीरा की रचनाएँ

मीरा द्वारा रचित कही जाने वाली रचनाएँ जो अब तक प्राप्त हुई है, उनकी कुल संख्या दस है। ये रचनाएँ हैं (1) गीतगोविन्द की टीका, (2) नरसीजी का माया (3) राग सोरठ का पद, (4) मलार राग, (5) राग गोविन्द, सत्य भामा नु रुसणु, (6) मीरा की गरबी, (7) रुकमणी मंगल, (8) नरसी मेहता की हुण्डी, (9) चरीत, और (10) स्फुट पद। इनमें से केवल 'स्फुट पद' ही मीरा की प्रामाणिक रचना मानी जाती है। मीरा के 'स्फुट पद' आजकल 'मीराबाई की पदावली' के नाम से प्रकाशित रूप में उपलब्ध हैं। मीरा की भाषा बोलचाल की राजस्थानी भाषा है। जिस पर ब्रज भाषा, गुजराती और खड़ी बोली का रंग चढ़ा हुआ है।

मीरा की कठिनाइयाँ

1516 ई. में मीरा का विवाह मेवाड़ के महाराणा साँगा के पुत्र –भोजराज से कर दिया गया लेकिन दुर्भाग्य से विवाह के सात वर्ष पश्चात् ही भोजराज की मृत्यु हो गई। मीरा को इससे भारी आघात लगा और उसका मन संसार से उचट गया और अब वह अपना अधिकांश समय सत्संग और भजन–कीर्तन में व्यतीत करने लगी। मीरा के पिता रत्नसिंह भी बाबर से लड़ते हुए खानवा के युद्ध में मारे गए। सन् 1528 में राणा साँगा भी इस दुनिया से चल बसे। मीरा के दादा राव दूदा की 1515 से पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त मालदेव ने मेड़ता पर भी अपना अधिकार कर लिया था। ऐसी स्थिति में मीरा को मेड़ता भी छोड़ना पड़ा और पुनः मेवाड़ आना पड़ा। मेवाड़ में राजगद्दी के प्रश्न पर राजपरिवार में गृह– क्लेश शुरू हो गया। राणा साँगा के बाद पहले रतनसिंह और उसके बाद विक्रमादित्य मेवाड़ के शासक हुए। मीरा के स्वतन्त्र विचारों के कारण मेवाड़ के राणा उससे नाराज थे। मीरा के इ साधुओं को संगति में बैठना, कृष्ण की मूर्ति के आगे नाचना आदि राणा को पसन्द नहीं आण। राणा ने इसे अपने राजपरिवार की मर्यादाओं के विरुद्ध माना। कहा जाता है कि राणा द्वारा भीत की जीवन लीला समाप्त करने के लिए उसे विष का प्याला तथा सर्प भेजा गया परन्तु ईश्वर कृपा से मीरा का कुछ नहीं बिगड़ा। इस प्रकार मीरा को अनेक यातनाएँ दी गई परन्तु उसने इन सभी कष्टों को प्रसन्नतापूर्वक सहन किया। अब सांसारिक जीवन की अपेक्षा मीरा का थार भक्ति–भावना में अधिक रमने लगा। मीरा ने अपना सर्वस्व कृष्ण की भक्ति में समर्पित कर दिया और लोकलाज तथा राजपरिवार परम्पराओं की परवाह नहीं की।

मीरा की कृष्ण के प्रति असीम अनुरक्ति

मीरा में भगवान कृष्ण के प्रति अटूट आस्था थी। मीरा ने अटूट प्रेम के साथ स्वयं को भगवान कृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया। वह रात–दिन भगवान कृष्ण के चरणों में बैठी रहती और उनके भजन गाती रहती थी। कुछ समय पश्चात् मीरा मेड़ता को छोड़कर वृन्दावन चली गई और वहाँ भगवान कृष्ण की भक्ति में तल्लीन हो गई। एक दिन मौरा वृन्दावन के उच्चकोटि के सन्त रूप गोस्वामी से मिलने गई परन्तु उन्होंने मीरा से मिलने से इनकार कर दिया और कहा कि वे स्त्रियों से भेंट नहीं करते हैं। इसके उत्तर में मीरा ने कहला भेजा कि क्या वृन्दावन में पुरुष निवास करते हैं? यदि वृन्दावन में कोई पुरुष है। तो वे केवल श्रीकृष्ण हैं। रूप गोस्वामी इस उत्तर को सुनकर मीरा से भेंट करने को सहमत हो। गए। कुछ समय पश्चात् मीरा द्वारिका चली की मूर्ति के सामने भजन कीर्तन करते हुए मीरा ने अपना शेष जीवन व्यतीत किया।

मीरा की भक्ति भावना

मीरा की कृष्ण–भक्ति में अटूट आस्था थी। उसको कृष्ण–भक्ति तीन सोपानों से होकर गुजरती है। पहला सोपान प्रारम्भ में उसका कृष्ण के लिये लालायित रहने का है। इस अवस्था में वह व्यग्रता से गा उठती है– "मैं विरहणी बैठी जागू, व सोवी री आली" वह कह उठती है, "दरस बिन दूखण लागें नैण" दूसरा सोपान वह है जब कृष्ण–भक्ति से उपलब्धियों की प्राप्ति हो जाती है और वह कहती है– "पायोजी मैंने राम राम घन पायौ" तीसरा सोपान वह है जब उसे आत्मबोध हो जाता है, जो सायुज्य भक्ति को चाम सीढ़ी है। वह अपनी भक्ति में सरल भाव से ओत–प्रोत होकर कहती है– "म्हारे तो गिरा गौपाल दूसरो न कोई" मीरा अपने प्रियतम कृष्ण से मिलकर उनके साथ एकाकार हो जाती है। मीरा की उपासना माधुर्य भाव की थी अर्थात् वह अपने देव श्रीकृष्ण की भावना त्रिप या पति के रूप में करती थी। कृष्ण को ही वह परमात्मा और अविनाशी मानती थी। उसक भक्ति की विशेषता यह थी कि उसमें ज्ञान पर उतना बल नहीं था जितना भावना पर था। मोरा पद अपनी तीव्र प्रेमानुभूति के कारण जनसाधारण में अत्यन्त लोकप्रिय बनते चले गए।

मीरा सगुण भक्ति की उपासना थी और श्रीकृष्ण उनके शोभादेव थे। कुछ विद्वानों के अनुसार मीरा निर्गुण भक्ति की उपासना थी। डॉ. पीताम्बरदत्त बड़वाल के अनुसार मीरा योग या नाथ पंथ से प्रभावित थे पुरोहित महरादेव के विषय में कोई भ्रांति नहीं होनी चाहिए। गिरधर गोपाल (कृष्ण) ही एकमात्र मीरा के शोभादेव थे। अपने साधु के सगुण स्वरूप का वर्णन करते हुए वह कहता है– बसो मेरे नैनन में नन्दलाल मोहनी मूरति साँवरी सूरति, नैना बने विसाल। अधर सुधारस मुरली राजति, उर वैजन्ती माल।

मीरा बाई का राजस्थान के धार्मिक जीवन पर प्रभाव

राजस्थान का धार्मिक जीवन प्राचीन काल से ही विविधता से भरा रहा है। राजस्थान के राजपूत समाज में शाही परिवारों का अत्यधिक प्रभाव था, लेकिन मीरा बाई ने अपनी भक्ति के माध्यम से इस धार्मिक जीवन में परिवर्तन लाने का कार्य किया। उनके द्वारा प्रस्तुत भक्ति के सिद्धांतों ने न केवल राजपूत समाज बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान में धार्मिक विश्वासों में एक नये दृष्टिकोण का उद्घाटन किया। उनके काव्य और भक्ति गीतों ने भारतीय समाज को जाति–व्यवस्था, वर्ग भेद और धार्मिक विभाजन के बारे में पुनः विचार करने को प्रेरित किया। मीरा बाई का संदेश था कि भगवान के प्रति सच्ची भक्ति किसी भी रूप में भेदभाव नहीं करती।

निष्कर्ष :

मीरा बाई का योगदान महत्वपूर्ण है कि उन्होंने भक्ति आंदोलन को एक नया रूप दिया, जिसमें ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण को न केवल धार्मिक साधना के रूप में देखा गया, बल्कि यह एक सामाजिक और मानसिक मुक्ति का मार्ग भी बना। मीरा बाई का जीवन और कार्य आज भी हमें प्रेरित करता है कि धार्मिक आस्थाओं का पालन करते हुए समाज में समानता और शांति की दिशा में कार्य किया जा सकता है। उनके द्वारा रचित भक्ति गीतों ने सामाजिक भेदभाव और महिलाओं के अधिकारों पर भी विचार किया। मीरा बाई का योगदान भारतीय धार्मिक और सामाजिक जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण था। उन्होंने भक्ति आंदोलन के माध्यम से न केवल धार्मिक आस्थाओं को गहराई दी, बल्कि सामाजिक समानता और महिला अधिकारों के पक्ष में भी जोर दिया। उनके काव्य साहित्य और भक्ति गीतों ने भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा दी और उन्हें भारतीय संस्कृति में एक अमूल्य धरोहर बना दिया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. वर्मा शंकरलाल 'मीरा बाई और राजस्थान भक्ति आंदोलन की परंपरा' (2013) : राजस्थान साहित्य संस्थान, जोधपुर।
2. शर्मा, विजय कुमार, 'राजस्थान का धार्मिक इतिहास और भक्ति परंपरा' (2016) : राजपुस्तक पब्लिकेशन, जयपुर।
3. पांडे, कृष्णा देवी, 'राजस्थान में मीरा बाई का धार्मिक योगदान' (2017) : भारतीय अध्ययन प्रकाशन, दिल्ली।
4. शाह, सिद्धार्थ, 'मीरा बाई और उनका साहित्य एक अध्ययन' (2014) : साहित्य अकादमी, अहमदाबाद।
5. पाटीदार, राकेश, 'मीरा बाई के पदों में समाज सुधार की झलक' (2015) : राजस्थान संस्कृति पत्रिका, अंक 25, पृ. 78–84।
6. शर्मा, समीर, 'राजस्थान के धार्मिक आंदोलनों में मीरा बाई का प्रभाव' (2015) : इतिहास और संस्कृति अध्ययन, अंक 31,, पृ. 112–118।
7. गुप्ता, रेणु, 'मीरा बाई का भक्ति साहित्य और सामाजिक संदेश' (2020) : भारतीय समाज और संस्कृति, अंक 40, पृ. 50–58।
8. नंदन, गौतम, 'भारत के प्रमुख संत और उनकी शिक्षाएँ' (2018) : साहित्य विद्या, दिल्ली।
9. भट्ट, राघवेंद्र, 'भक्ति साहित्य और संत परंपरा मीरा बाई का योगदान' (2020) : राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
10. कुमार, विकास, मीरा बाई और उनकी भक्ति (2020) : राजस्थान विश्वविद्यालय, जोधपुर।
11. राघवेंद्र, हरिवंश, मीरा बाई के जीवन और साहित्य का ऐतिहासिक विश्लेषण (2018) : बृज प्रकाशन, जयपुर।
12. देवी, शांति, 'राजस्थान का धार्मिक आंदोलन और भक्ति विचारधारा' (2018) : राजस्थानी प्रेस, जोधपुर।
13. अहमद, सैयद मुहम्मद 'भक्ति आंदोलन और मीरा बाई का योगदान' (2018) : भारतीय साहित्य संस्थान, दिल्ली।
14. देसाई, इंद्रजीत, 'मीरा बाई का धार्मिक और सामाजिक योगदान' (2018) : भारतीय भक्ति साहित्य, अंक 19, 2017, पृ. 45–52।
15. गोयल, रचना, 'मीरा बाई और राजस्थान में भक्ति आंदोलन का प्रभाव' (2018) : सांस्कृतिक अध्ययन, अंक 22, पृ. 58–64।
16. कुमार, पंकज 'भारत में भक्ति आंदोलन और मीरा बाई' (2014) : हिंदी अकादमिक प्रेस, दिल्ली।
17. शर्मा, कृष्णा 'राजस्थान की भक्ति परंपराएँ और उनका समाज पर प्रभाव' (2018) : राजस्थानी प्रकाशन, जयपुर।